शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सामाजिक समरसता के अमर गायक संत रविदास

अजय सिंह रावत (शोधार्थी)
हिंदी अध्ययन केंद्र
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
गांधी नगर, गुजरात, भारत

शोध संक्षेप

मध्यकालीन संतों में संत रविदास जी समरसतावादी विचारों के अग्रणी थे। उन्होंने अपने समय की शोषणकारी सत्ता को नकारा। तत्कालीन समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था को तोड़ने और सामाजिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया। उनके समकालीन कबीरदास एवं अन्य निर्गुण संत कवियों के विचार भी ऐसे ही थे। रविदास जी ने प्रभुवर्गीय सत्ता को स्वीकार नहीं किया है। उनके सन्देश अत्यंत सीधी-सरल भाषा में होने से समाज में लोकप्रिय हैं। संत रविदास भक्ति और नीति में कोई भेद नहीं करते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में संत रविदास के द्वारा सामाजिक समरसता के सन्देश का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

संत रविदास जी ने समाज में जाति की केन्द्रीयता को नष्ट किया और स्वस्थ समाज का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने मानवतावाद को बढ़ाया दिया। हाशिए के समाज को मुख्या धारा में लाये। वे अपने समय में दूसरी परम्परा के कवि हैं। उन्होंने अपने विचारों से स्पष्ट किया कि वैदिक मार्ग, जातिवाद से भी बड़ा ज्ञान है। भक्ति करने के अधिकार को उन्होंने दलित लोगों तक पहुँचा दिया॥

गुरु रविदास ने उस समय की आवाज को पकड़ा। समाज कहाँ खड़ा है, इसका चिंतन कर उसे सही दिशा दिखाने का प्रयास किया। संत रविदास के विचार तत्कालीन आंदोलनधर्मी साहित्य का हिस्सा है। यदि हम तत्कालीन विचारोत्तेजक संतों को देखें, तो पाते हैं कि निर्गुण धारा का प्रवर्तन समाज द्वारा दमन किये लोगों ने किया है। क्रांतिकारी बुद्ध का समाज आन्दोलन की तरह ही उनका आन्दोलन है। जाति समाज की सच्चाई है। अन्याय के विरोध में, जाति का दंभ मिटाने वाला, इतना बड़ा आंदोलन भक्तिकाल में है। अनेक साहित्यकार उनके विचारों से प्रेरणा लेते हैं। उन्होंने आदर्शवाद को हटा का समतामूलक समाज का निर्माण किया।

वे हाशिए के समाज के नायक हैं। समाज में क्रांति का उन्नयन करने वाले है। मनुष्य को मनुष्य ण समझ कर उसके प्रति निर्ममता का व्यवहार भयंकर दंश है। ऐसे समय में संत रविदास ने समाज को लोकधर्मिता के विचार दिए। लोकायत दर्शन को आगे बढ़ाने वाले वे जनकवि हैं। उन्होंने अपनी नई दृष्टि का निर्माण कर समाज को नये मूल्य दिए। नये मापदंड खड़े किए। वास्तव में आदर्श भारतीय समाज का सपना 'यूटोपिया' अभिजात्य वर्ग के साहित्य की देन नहीं है, बल्कि यह तो जाति व्यवस्था का

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रखर विरोध करने वाली शख्सियत संत रविदास की देन है, जिनका लोग भरपूर आदर और सम्मान करते हैं। संत रविदास भारत के प्रथम व्यक्ति हैं, जिन्होंने अपने गीत 'बेगमपुरा' में आदर्श भारतीय समाज का नक्शा प्रस्तुत किया है। 'बेगमपुरा; अर्थात बिना ग़मों का शहर, जो एक जातिविहीन, वर्गविहीन, आधुनिक समाज है।"[1] उन्होंने पराधीनता को पाप माना है :

पराधीनता पाप है
जान लेहु रे मीता
रविदास दास पराधीन सों
कोन करे है प्रीत।।"[2]

रविदास जी ने ऐसे समाजवादी समाज की कल्पना की है, जहाँ सब प्रसन्न रहें :

"ऐसा चाहूं राज मैं
जहाँ मिलै सबन को अन्न।
छोट बड़ो सब सम बसै
रविदास रहे प्रसन्न।।"[3]

रविदास जी ने स्वराज को महत्व दिया है :

"रविदास मानुष करि बसन कूं
सु कर है दुई ठावं
इक सु है स्वराज महिं
दूसरा मरघट गांव।।"[4]

रविदास जी विद्या का महत्व बताते हुए कहते हैं :

"सत विद्या को पढ़े
प्राप्त करें सदा ज्ञान।
रविदास कहे बिन विद्या
नर को जान अजान।।"[5]

धर्म के ढकोसलों को नकराते हैं :

"पांडे हरि विच अंतर डाढा।
मुंड मुंडावे सेवा पूजा
भ्रम का बंधन गाढ़ा।।"[6]

संत रविदास जी धर्मनिरपेक्ष समाज की बात करते हैं :

"मुसलमान सों दोस्ती
हिंदुअन सों कर प्रीता
रविदास जोति सभ नाम की है
सभ हैं अपने मीत।।"[7]

उन्होंने जाति के आधार पर नहीं गुण के आधार पर व्यक्ति को महत्व देने के लिए कहा है :

"रविदास बामण मत पूजिए
जऊ होवे गुण हीन।
पूजहिं चरण चांडाल के
जउ होवे गुन परवीन।।"[8]

जन्म के आधार पर कोई बड़ा-छोटा या ऊँचा-नीचा नहीं होता। मनुष्य को नीचा उसका ओछा व्यवहार बनाता है।

"रविदास जन्म के कारने होत
न कोऊ नीच।
नर कूं नीच करि डारि है
ओछे करम की कीच।"[9]

रविदास जी जातियों की संरचना को गहरी दृष्टि से देखते हैं। जाति के अन्दर जाति कैसे समाहित है यह रविदास जी हमें बताते है।

"जात-जात में जात है ज्यों
केलन में पात।
रविदास न मानुष जुड़ सकें
जो लों जात न जात।।"[10]

ढोंगी पंडितों, मंदिरों को वे खोखला मानते हैं :.

"थोथा पंडित थोथी वाणी,
थोथी नाम बिन सबै कहानी।
थोथा मंदिर भोग विलास,
थोथी आन देव की आसा।।"[11]

रविदास ऐसे समाज की परिकल्पना करते हैं, जहाँ दुख, तकलीफ, कष्ट, लाचारी, शोषण इत्यादि न हो।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"बेगमपुरा सहर को नाउ।
दुखु अन्दोहु नहीं तिहि ठाउ।
ना तसवीस खिराजु न मालु।
खउफुन खता न तरसु जुवालु।
अब मोहि खूब बतन गह पाई।
उहां खैरि सदा मेरे भाई रहा।।
काइमु दाइमु सदा पातिसाही।
दोम न सोम एक सो आही।।
आबादानु सदा मसहूर
उहां गनी बसहि मामूर।।
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै।
महरम महल न को अटकावै।।
कहि रविदास खलास चमारा।
जो हम सहरी सु मीतु हमारा।।"[12]

प्रसिद्ध लेखिका गेल ओम्वेट के अनुसार "यूरोप के टॉमस मूर ने आदर्श समाज की परिकल्पना 'यूटोपिया' का विचार वर्ष 1516 ई. में दिया, लेकिन टॉमस मूर से भी कहीं पहले, संत रविदास ने आदर्श समाज की परिकल्पना 'बेगमपुरा' के रूप में विश्व के सामने रख दी थी।"[13]

इनके विचार मानवाधिकार, विश्व कल्याण, विश्व बंधुत्व को बढ़ावा देते हैं तथा सार्थक समाज का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

डॉ. मीरा गौतम ने लिखा है "रविदास जैसे संत इस लोक में महानायक हैं, देशकाल और इतिहास के अंतराल को लांघते हुये ये महानायक अपने निर्णय स्वयं करते हैं, ऐसे निर्णय जिन्हें शताब्दियां नकार नहीं सकती और सहस्त्राब्दियां जिनकी प्रतीक्षा करती हैं।"[14]

रविदास सिखाते हैं कि मनुष्य के विकास के लिए नया अर्थ आवश्यक है।

निष्कर्ष

संत रविदास भक्तिकाल के महान विचारकों में से एक हैं। उनकी सामाजिक चेतना प्रगतिशील है। उनके विचार जीवन दर्शन से जुड़े हैं। वे स्वस्थ समाज की माँग अपने समय में करते हैं। अपनी आधुनिक चेतना से वे रुढ़िवादी समाज को तोड़ते हैं। कर्मकांड और ढोंगीपन की गंभीर आलोचना करते हैं। उनकी दृष्टि देश में विविधता में एकता की सोच को सहायता देती है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 सीकिंग बेगमपुरा, गेल ओम्वेट, नवयाना पब्लिकेशन, एम 100, प्रथम मंजिल, साकेत, दिल्ली:17, संस्करण 2008, पृष्ठ 2

2 अमृतवाणी, सतगुरु रविदास महाराज जी ; सटीक, सुरिंद्र दास बावा, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान पब्लिक चेरीटेबल ट्रस्ट, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, संस्करण 2009, पृष्ठ 42

3 अमृतवाणी, सतगुरु रविदास महाराज जी, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीरगोवर्धनपुर वाराणसी, संस्करण 2010, पृष्ठ 2

4 अमृतवाणी, सतगुरु रविदास महाराज जी, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीरगोवर्धनपुर वाराणसी, संस्करण 2010, पृष्ठ 170

5 अमृतवाणी, सतगुरु रविदास महाराज जी, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीरगोवर्धनपुर वाराणसी, संस्करण 2010, पृष्ठ 177

6 अमृतवाणी, सतगुरु रविदास महाराज जी, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीरगोवर्धनपुर वाराणसी, संस्करण 2010, पृष्ठ 36

7 अमृतवाणी, सतगुरु रविदास महाराज जी, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीरगोवर्धनपुर, वाराणसी, संस्करण 2010, पृष्ठ 167

8 अमृतवाणी, सतगुरु रविदास महाराज जी, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीरगोवर्धनपुर वाराणसी, संस्करण 2010, पृष्ठ 164

9 अमृतवाणी, सतगुरु रविदास महाराज जी, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीरगोवर्धनपुर वाराणसी, संस्करण 2010, पृष्ठ 164

10 अमृतवाणी, सतगुरु रविदास महाराज जी, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीरगोवर्धनपुर वाराणसी, संस्करण 2010, पृष्ठ 165

11 अमृतवाणी, सतगुरु रविदास महाराज जी, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीरगोवर्धनपुर वाराणसी, संस्करण 2010, पृष्ठ 81

12 अमृतवाणी, सतगुरु रविदास महाराज जी, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीरगोवर्धनपुर वाराणसी, संस्करण 2010, पृष्ठ 2।

13 सीकिंग बेगमपुरा, गेल ओम्वेट, नवयाना पब्लिकेशन, एम 100, प्रथम मंजिल, साकेत, दिल्ली.17, संस्करण 2008, कवर पेज

14 अमृतवाणी, सतगुरु रविदास महाराज जी, श्री गुरु रविदास जन्म स्थान मंदिर, सीरगोवर्धनपुर वाराणसी, संस्करण 2010, पृष्ठ 2